जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

नि:स्वार्थभाव और पवित्र हृदय से सही दिशा में किया गया सतत प्रयास कभी असफल नहीं होता।
ह्न आत्मा ही है शरण, पृष्ठ : 29

वर्ष : 27, अंक : 14 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (द्वितीय)2004 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

सम्पूर्ण भारतवर्ष में पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व हर्षोल्लासपूर्वक सानन्द सम्पन्न

पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व दि. 18 सितम्बर से 27 सितम्बर, 2004 तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर की ओर से कुल 542 स्थानों पर विद्वान भेजे गये। आमंत्रण प्राप्त सभी स्थानों के जैन मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि आयोजनों के माध्यम से महती धर्मप्रभावना हुई। जयपुर के समाचार विगत अंक में प्रकाशित किये जा चुके हैं, इस अंक में दि. 9 अक्टूबर तक देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

कोल्हापुर (महा.) : यहाँ श्री सर्वोदय स्वाध्याय समिति, कोल्हापुर द्वारा श्री विद्यानन्दी सांस्कृतिक भवन में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के दोपहर में ग्रन्थाधिराज समयसार पर एवं रात्रि में दशधर्मों पर अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का लाभ स्थानीय एवं आगन्तुक समाज को प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा दोपहर में गुणस्थान विवेचन पर कक्षा एवं सायंकाल में छहढ़ाला ग्रन्थ पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: पण्डित जिनचन्दजी आलमान द्वारा परमात्मप्रकाश पर प्रवचन तथा पण्डित दिग्विजयजी आलमान, हेरले एवं पण्डित जितेन्द्रजी चौगुले, भिलवडी द्वारा तत्त्वार्थसूत्र एवं क्रमबद्धपर्याय पर कक्षा ली गई।

दोपहर में व्याख्यानमाला के अंतर्गत पण्डित शांतिनाथजी पाटील वसगडे, पण्डित शीतलजी शेट्टी अ.लाट, पण्डित नेमिनाथजी बालिकाई बाहुबली, पण्डित श्रीपालजी शास्त्री नल्लूर, पण्डित नितिनजी कोठेकर भोसे, पण्डित किरणजी पाटील दानोली, पण्डित दिग्विजयजी आलमान एवं पण्डित शीतलजी आलमान हेरले के प्रवचन हुये।

प्रतिदिन प्रात: चोवीस तीर्थंकर विधान एवं सायंकाल में जिनेन्द्र भक्ति का आयोजन किया गया। रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए; जिसके अन्तर्गत दिनांक 26 सितम्बर को मंचित नाटक श्रीपाल-मैनासुन्दरी विशेष रहा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र. यशपालजी जैन जयपुर एवं पण्डित जिनचन्दजी आलमान हेरले के निर्देशन में सम्पन्न हुये। साथ ही महाविद्यालय के अनेक स्नातक विद्वानों का एवं स्थानीय महानुभावों का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

इस प्रसंग पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 65 हजार रुपयों का सत्साहित्य एवं 10 हजार 500 रुपयों के सी.डी. एवं ऑडियो कैसिट्स घर-घर पहुचें तथा वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के अनेक सदस्य बने।

दि. 27 सितम्बर को समापन समारोह के अवसर पर जिनवाणी के रहस्योद्घाटन में दिये गये अमूल्य योगदान को ध्यान में रखते हुये सर्वोदय स्वाध्याय ट्रस्ट, कोल्हापुर की ओर से डॉ. भारिल्ल को **सर्वोदयी सारस्वत** की उपाधि से सम्मानित किया गया। **ह्न शीतल शेट्टी**

मन्दसौर (म.प्र.) : यहाँ श्री शांतिनाथ दि. जैन मन्दिर, नई आबादी में प्रात: पूजन विधान के पश्चात् पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, इन्दौर के समयसार एवं नियमसार ग्रन्थ पर तथा रात्रि में दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित अर्पितजी शास्त्री, बड़ामलहरा द्वारा प्रौढ़कक्षा एवं सांयकाल में बालकक्षा ली गई।

इन्दौर (साधनानगर-म.प्र.) : यहाँ श्री पंचबालयती एवं विहरमान बीस तीर्थंकर जिनालय, साधनानगर में पण्डित उत्तमचन्दजी जैन, सिवनी के तीनों समय अत्यन्त सारगर्भित प्रवचन हुये; जिसके द्वारा समाज में महती धर्मप्रभावना हुई।

अजमेर (राज.) : यहाँ श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में भोपाल से पधारे पण्डित कपूरचन्दजी कौशल द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर अत्यन्त सुबोध शैली में मार्मिक प्रवचन हुये।

इस अवसर पर दशलक्षण विधान का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम हीराचन्दजी बोहरा ने सम्पन्न कराये। **ह्न विजय पाण्डया**

(शेष पृष्ठ 4 पर...)

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 6:45 बजे अवश्य सुनें।
साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से 011-32106419 नम्बर पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

17 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

गाथा–२३

सब्भावसभावाणं जीवाणं तह य पोग्गलाणं च।
परियट्टणसंभूदो कालो णियमेण पण्णत्तो ।।

(हरिगीत)

सत्तास्वभावी जीव पुद्गल द्रव्य के परिणमन से।
है सिद्धि जिसकी काल वह कहा जिनवरदेव ने।।

गाथा २२ में कह आये हैं कि ह्न छह द्रव्यों में पाँच द्रव्य अस्तिकाय हैं।

प्रस्तुत २३वीं गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि ह्न सत्ता स्वभाववाले जीवों और पुद्गलों के परिवर्तन से सिद्ध होनेवाले कालद्रव्य का सर्वज्ञों द्वारा नियम से उपदेश दिया गया है।

आचार्य अमृतचन्द्र उक्त गाथा की टीका में कहते हैं कि ह्न गाथा में कालद्रव्य का कथन नहीं किया गया होने पर भी उसे अर्थपना (पदार्थपना) सिद्ध होता है।

इस जगत में जीवों और पुद्गलों को सत्तास्वभाव के कारण प्रतिक्षण उत्पाद–व्यय–ध्रौव्य की एकवृत्तिरूप परिणाम वर्तता है। वह परिणाम वास्तव में काल द्रव्य रूप सहकारी कारण के सद्भाव में दिखाई देता है। धर्म, अधर्म, आकाश के गति, स्थिति, अवगाह परिणाम की भाँति।

जिसप्रकार गति, स्थिति और अवगाहरूप परिणाम धर्म, अधर्म और आकाशरूप सहकारी कारणों के सद्भाव में होते हैं, उसीप्रकार उत्पाद–व्यय–ध्रौव्य की एकतारूप परिणाम काल द्रव्य के सहकारी कारण के सद्भाव में होते हैं अर्थात् जीव और पुद्गल के परिणमन में सहकारी कारण कालद्रव्य है।

वह कालद्रव्य जीव व पुद्गल के परिणाम की 'अन्यथा अनुपपत्ति' हेतु के द्वारा सिद्ध होता है। 'अन्यथा अनुपपत्ति' का अर्थ है कि जीव व पुद्गल का परिणमन अन्य किसीप्रकार से नहीं हो सकता; इसलिए निश्चय काल अनुक्त होने पर भी अर्थात् यद्यपि कालद्रव्य का नामोल्लेख नहीं किया, तथापि वह द्रव्यरूप से विद्यमान है और निश्चयकाल के पर्यायरूप जो व्यवहारकाल है, वह पुद्गलों के परिणमन से जाना जाता है।

उक्त गाथा का स्पष्टिकरण करते हुये जयसेनाचार्य टीका में कहते हैं कि यद्यपि समय, घड़ी, घंटा आदि व्यवहारकाल अपने निमित्तभूत पुद्गल परमाणु के परिणमन द्वारा ज्ञात होते है, तथापि उस समय घड़ी आदि पर्यायरूप व्यवहारकाल का उपादानकारण कालाणु रूप कालद्रव्य ही है। जिसप्रकार कुंभकार, चक्र, चीवर आदि बहिरंग निमित्त से उत्पन्न घटकार्य का मिट्टी पिण्डरूप उपादानकारण है तथा जिसप्रकार कर्मोदय के निमित्त से उत्पन्न मनुष्य, नारक आदि पर्यायरूप कार्य का जीव उपादानकारण है, उसीप्रकार घड़ी, घंटा एवं समय आदि व्यवहारकाल का उपादानकारण कालाणुरूप कालद्रव्य है।

इसी बात का कविवर हीरानन्दजी ने निम्नांकित छन्दों में इसप्रकार स्पष्टीकरण किया है, वे कहते हैं ह्न

(दोहा)

जीव विषै पुग्गल विषै, सत–सुभाव परिनाम।
परिवर्तन कारन लसै, कालदरव अभिराम।।
वरनादिक गुनरहित जे, अगुरु–लघुक–गुनवंत।
वरतनलच्छ अमूरती, काल दरव विगसंत।।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी प्रस्तुत गाथा २३ पर प्रवचन करते हुए कहते हैं कि भले ही कालद्रव्य को कायसंज्ञा नहीं कही जाती; तथापि वह द्रव्य अस्तित्वरूप वस्तु तो है।

उत्पाद–व्यय–ध्रौव्यस्वभाव के धारक जीव व पुद्गलों के परिणमन से, उनकी नई से पुरानी अवस्था होने से उसमें निमित्तभूत निश्चय कालद्रव्य है ह्न ऐसा भगवान ने कहा है। वस्तु नई से पुरानी होती है, इससे कालद्रव्य है ह्न यह सिद्ध होता है।

हाँ, जिसप्रकार पुद्गल परमाणु इकट्ठे होकर स्कन्ध होता है, वैसे कालाणु इकट्ठे नहीं होते, क्योंकि कालाणु में स्निग्ध–रुक्षता का गुण नहीं है। कालाणु रत्नों की राशि के समान सम्पूर्ण लोक में हैं और वे असंख्य हैं तथा प्रत्येक कालाणु एक स्वतंत्र द्रव्य है।

जिसतरह धर्म, अधर्म व आकाशद्रव्य क्रमश: गति, स्थिति व अवगाहन में निमित्त है, उसीप्रकार कालद्रव्य परिणमन में निमित्त है। कालद्रव्य अनादि–अनन्त असंख्य हैं। कालद्रव्य के निमित्त बिना किसी द्रव्य का परिणमन नहीं होता कालद्रव्य को पंचास्ति द्वारा सिद्ध किया है। नयी और पुरानी पर्यायों से कालद्रव्य का माप निकलता है। जैसे ह्न कोई वस्तु आज नई है, वह कल पुरानी है, रोटी आज ताजी है, वह कल बासी हो जाती है, इससे सिद्ध होता है कि कोई व्यवहारकाल है और व्यवहारकाल का आधार निश्चय कालद्रव्य है।

शास्त्र में सत् पद प्ररूपणा आती है अर्थात् शब्द है तो उसका वाच्य न हो ह्न ऐसा नहीं होता। कोई कह सकता है कि ''गधे के सींग'' यह पद तो है, परन्तु इसका वाच्य पदार्थ नहीं है। अरे भाई ! ''गधे का सींग' यह पद नहीं वाक्य है। पद तो 'गधा' है और 'सींग' है। इन दोनों पदों के वाच्य पदार्थ भी हैं। इसीप्रकार जब 'काल' पद है तो उसका वाच्य कालद्रव्य है।

इसप्रकार जीव और पुद्गल आदि के परिणमन द्वारा कालद्रव्य सिद्ध होता है। इनके परस्पर निमित्त–नैमित्तिक संबंध है। जीव और पुद्गल के परिणाम नैमित्तिक हैं और कालद्रव्य निमित्त है। दोनों एकसाथ हैं, आगे–पीछे नहीं। यह संबंध न केवल अशुद्धता में होता है, बल्कि शुद्धता में भी होता है। जैसे कि ह्न केवलज्ञान नैमित्तिक और कालद्रव्य निमित्त ह्न ऐसा निमित्त–नैमित्तिक संबंध भी है न ! जगत में छहों द्रव्यों में जो–जो पर्यायें होती हैं, उन सबमें कालद्रव्य निमित्त है।''

इसप्रकार आचार्य कुन्दकुन्ददेव से लेकर गुरुदेव श्री कानजीस्वामी तक के कथनों से यह सिद्ध हुआ कि ह्न जो पर्याय स्वयं की योग्यता से परिणमित न होती हो, उसे तो कालद्रव्य परिणमित नहीं करा सकता, किन्तु

जो-जो द्रव्य स्वयं की स्वतंत्र योग्यता से जब जिस पर्यायरूप परिणमित होती है, उसमें उस समय घड़ी, घंटारूप व्यवहारकाल और निश्चयकाल निमित्त होता ही है। ●

गाथा-२४

ववगदपणवण्णरसो ववगददोगंधअट्ठफासो य।
अगुरुलहुगो अमुत्तो वट्टणलक्खो य कालो त्ति।।

(हरिगीत)

रस-वर्ण पंचरु फरस अठ अर गंध दो से रहित है।
अगुरुलघुक अमूर्त युत अरु काल वर्तन हेतु है।।

पिछली गाथा २३ में यह कह आये हैं कि यद्यपि कालद्रव्य अस्तिकायरूप से अनुक्त है, उसका कथन अस्तिकायरूप से नहीं किया गया; तथापि उसे पदार्थपना सिद्ध होता है। वह भी एक स्वतंत्र द्रव्य है और वह सभी द्रव्यों के परिणमन में निमित्त होता है।

अब प्रस्तुत २४वीं गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि ह्न वह कालद्रव्य पाँच वर्ण और पाँच रस तथा दो गंध एवं आठ स्पर्श से रहित है तथा अगुरुलघु, अमूर्त और वर्तना लक्षणवाला है।

उक्त गाथा की टीका में टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि ह्न यहाँ निश्चयकाल का स्वरूप कहा है। लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश में एक-एक कालाणु अर्थात् कालद्रव्य स्थित है। वह कालाणु अर्थात् कालद्रव्य निश्चयकाल है। कालाणु (कालद्रव्य) अमूर्त होने से सूक्ष्म है, अतीन्द्रियज्ञान ग्राह्य है और षट्गुण हानि-वृद्धि सहित अगुरुलघुत्व स्वभाववाला है। काल का लक्षण वर्तना हेतुत्व है, जिसप्रकार स्वयं घूमने की क्रिया करते हुए कुम्हार के चाक को कीलिका सहकारी है, उसीप्रकार निश्चय से स्वयमेव परिणाम को प्राप्त जीव पुद्गलादि द्रव्यों को व्यवहार से कालाणुरूप निश्चयकाल बहिरंग निमित्त है।

यद्यपि अलोकाकाश में कालद्रव्य नहीं है, परन्तु जिसतरह एक लम्बे बांस के निम्न भाग को हिलाने मात्र से उसके ऊपर का भाग स्वयं हिलता है तथा जिसतरह रसना के द्वारा स्वादिष्ट वस्तु के चखने से सम्पूर्ण आत्मप्रदेशों में सुखानुभव होता है, उसीप्रकार लोकाकाश में विद्यमान कालद्रव्य अलोकाकाश में भी निमित्त बनता है; क्योंकि आकाशद्रव्य अखण्ड है, एक है।

यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि कालद्रव्य किसी द्रव्य के परिणमन का कर्ता नहीं है, स्वतंत्रता से स्वयमेव परिणमित होनेवाले द्रव्यों को बाह्य निमित्तमात्र है।

आचार्य जयसेन ने प्रश्न उठाया है और स्वयं समाधान भी प्रस्तुत किया है कि कालद्रव्य अन्य द्रव्यों को परिणमाने में निमित्त है ह्न यह तो ठीक है; परन्तु कालद्रव्य के परिणमन में कौन-सा द्रव्य निमित्त है ?

उत्तर स्वरूप वे स्वयं ही कहते हैं कि ह्न जिसतरह आकाशद्रव्य दूसरे द्रव्यों के आधार के साथ स्वयं का भी आधार है तथा जिसप्रकार ज्ञान, सूर्य, रत्न और दीपक स्व-परप्रकाशक है, उसीप्रकार कालद्रव्य दूसरे द्रव्यों के साथ स्व के परिणमन में भी सहकारीकारण है।

कविवर हीरानन्दजी ने उपर्युक्त भाव को काव्य की भाषा में इसप्रकार अभिव्यक्त किया है ह्न

(सवैया इकतीसा)

जैसें सीतकाल विषै कोऊ नर पाठ करै,
अपनै सुभाव ताकौं आग का सहारा है।
जैसें कुंभकारचक्र अपनै सुभाव भ्रमै,
पै परदंडकीलीनै भ्रमीकौं समारा है।।
तैसैं पाँचों द्रव्य विषै परिनाम नित्य ताकौ,
निहचै काल अनूनै नीकैकै विचारा है।
सोई काल अनूरूप वरतना लच्छिन है,
मूरत बिना ही सारे जगमैं निहारा है।।१४६।।

(चौपाई)

अब जो तरक करै कोउ ऐसैं, नभ अलोकमैं परिनत कैसैं।
ताकौ संबोधन कछु जैसौ, ग्रंथविषै अनुभौ सुनु तैसौ।।१४७।।

(सवैया इकतीसा)

जैसैंके परस इंद्री एक जागा परसैतैं,
परस का विषै स्वाद सारे अंग व्यापै है।
जैसै साँप काटै और व्रन आदि एक अंग,
सबै अंग दुखी होइ जीव परलापै है।।
तैसैं लोकमध्य काल अपने सुभाव सेती,
सबही अलोकमध्य परिनाम सापै है।
काल तौ सहायकारी परिनामधारी नभ,
वस्तु का सरूप तातैं वस्तुमाहिं आपै है।।१४८।।

उक्त छन्दों में कहा है कि ह्न जैसे कोई शीतकाल में स्वत: पढ़ता है तो अग्नि उसमें सहायक बन जाती है, जब कुम्हार का चक्र अपने स्वभाव से घूमता है, तो कीली उसका सहारा बन जाता है, उसीप्रकार पाँचों द्रव्य जब अपने स्वभाव से परिणमन करते हैं, तब कालद्रव्य उनमें निमित्त बनता है।

इसके बाद के १४७वें छन्द में प्रश्न उठाया है कि ह्न लोक का द्रव्य अलोकाकाश के परिणमन में कैसे निमित्त बनता है तो उसका समाधान १४८वें छन्द में किया है। उसमें कहा है कि जैसे एक अंग में कांटे के स्पर्श से सम्पूर्ण स्पर्शन् इन्द्रिय में पीड़ा होती है तथा सर्प दंश एक अंग में होता है और पूरा शरीर दुखता है, उसीप्रकार आकाशद्रव्य अखण्ड होने से लोक का कालद्रव्य अलोक के परिणमन में निमित्त बन जाता है।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी अपने प्रवचन में उक्त गाथा के रहस्य का उद्घाटन करते हुए कहते हैं कि ह्न जैसे आत्मा है, वैसे ही कालाणु भी हैं, यद्यपि कालाणु में आत्मा जैसे ज्ञान व आनन्द आदि भाव नहीं हैं, तथापि कालद्रव्य षट्गुणी हानि-वृद्धिरूप अगुरुलघुगुण संयुक्त है, अमूर्त है तथा परद्रव्य के परिणमन में निमित्त है।

कालाणु पदार्थ अरूपी है, उसमें वर्णादि गुण नहीं हैं, परन्तु वह वस्तु तो है। पुद्गल का जैसा स्वभाव है, काल का वैसा स्वभाव नहीं है। इसकारण कालाणु स्कन्धरूप नहीं होते। ●

(पृष्ठ 1 का शेष...)

अहमदाबाद (नवरंगपुरा) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित शैलेषभाई शहा, तलोद द्वारा तीनों समय समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक एवं दशधर्मों पर मार्मिक व्याख्यान हुये। **ह्न अजीतभाई मेहता**

भीण्डर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर गोलगंज में प्रात: सामूहिक पूजन-विधान के पश्चात् पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। गांधीगंज स्थित जिन-मंदिर में पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के सी.डी प्रवचन के उपरान्त आपके द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर तथा दोपहर में करणानुयोग पर विशेष कक्षा ली गई । सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्रभक्ति के उपरान्त दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ पायलवाला मार्केट स्थित श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर में प्रात: पूजन विधान के पश्चात् पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर के समयसार पर, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति होती थी। रात्रि में विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

पर्व के दौरान एक दिन पण्डितजी के सान्निध्य में अ.भा. जैन युवा फैडरेशन की मीटिंग रखी गई; जिसमें संगठन को सक्रिय एवं सुदृढ बनाने के सन्दर्भ में विचार विमर्श किया गया। **ह्न मनोज जैन**

नागपुर (महा.) : यहाँ इतवारी स्थित श्री महावीरस्वामी जिनालय में पर्व के अवसर पर पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन, बिजौलिया के प्रात: नियमसार, दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म तथा क्रिया-परिणाम-अभिप्राय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

इस अवसर पर श्री इन्द्रध्वजमण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सन्मतिजी जैन एवं पण्डित रवीजी जैन, पिडावा द्वारा सम्पन्न कराये गये। **ह्न अशोक जैन**

मुम्बई (घाटकोपर) : यहाँ श्री सर्वोदय भवन में प्रात: पूजन विधान के पश्चात् पण्डित रमेशचन्दजी जैन, जयपुर के मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में छहढ़ाला तथा दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये।

खुरई (सागर-म.प्र.) : यहाँ श्री देव पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर में जयपुर से पधारी ब्र. कल्पनाबेन, सागर के प्रात: समयसार पूर्वरंग पर, दोपहर में नयों का स्वरूप एवं रात्रि में दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। प्रवचनोपरान्त प्रश्नमंच का आयोजन किया गया। **ह्न धर्मेन्द्र सेठ**

सोलापुर (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर विदुषी पुष्पाबेनजी, खण्डवा के तीनों समय प्रवचन, प्रौढ़कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

नातेपुते (महा.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर विदुषी आशाबेनजी,मलकापुर के प्रात: नियमसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर अत्यन्त सरल एवं सहज भाषा में मार्मिक प्रवचन हुये। **ह्न अनिला गांधी**

टीकमगढ़ (म.प्र.) : यहाँ नवनिर्मित श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में डॉ. दीपककुमारजी जैन, जयपुर के प्रतिदिन प्रात: समयसार, दोपहर में षोडशकारण भावना एवं रात्रि में दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

द्रोणगिरि (सिद्धायतन-म.प्र.) : यहाँ पण्डित सरदारमलजी जैन, बैरसिया के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में छहढ़ाला तथा रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

पुणे (स्वाध्याय भवन) : यहाँ पर्व के उपलक्ष्य में पण्डित सुदीपकुमारजी जैन, बीना के प्रात: पूजन के पश्चात् समयसार, दोपहर में नयचक्र एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक तथा दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। **ह्न उदय शहा**

खनियाधांना (म.प्र.) : यहाँ श्री नन्दीश्वर दि. जैन मन्दिर में पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल, इन्दौर के तीनों समय प्रवचनसार, तत्त्वार्थसूत्र एवं दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुये। **ह्न सुनील जैन**

वर्धा (महा.) : यहाँ सुपार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर में पण्डित फूलचन्दजी मुक्किरवार, हिंगोली के प्रात: एवं रात्रि में समयसार तथा प्रवचनसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की प्रौढ़कक्षा एवं सायंकाल श्रीमती मंजुषाजी मुक्किरवार द्वारा बालकक्षा ली गई।

सिवनी (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित सुबोधकुमारजी सिंघई, सिवनी के प्रात: उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला तथा रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुए। प्रतिदिन प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् प्रथम प्रवचन पण्डित धीरजकुमारजी शास्त्री, जबेरा के मोक्षमार्गप्रकाशक पर हुये। दोपहर एवं सांयकाल प्रौढ़कक्षा एवं बालकक्षा भी ली गई। इस अवसर पर अ. भा. जैन युवा फैड. की शाखा का गठन किया गया।

पुणे (जैन बोर्डिंग) : यहाँ एच.एन.डी. जैन बोर्डिंग में प्रात: पूजन के पश्चात् पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर, काटोल के दोपहर एवं रात्रि में मार्मिक प्रवचन हुये। सांयकाल जिनेन्द्रभक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **ह्न सुरेन्द्र गांधी**

लूणदा (राज.) : यहाँ श्री पंचबालयति दि. जैन मन्दिर में पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, अरथूना के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में भक्तामर स्तोत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में 64 ऋद्धिविधान एवं स्थानीय विद्वान अंकितजी जैन द्वारा छहढ़ाला की कक्षा ली गई। **ह्न ललीत किकावत**

बीड (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पण्डित अरूणकुमारजी लालोनी, अशोकनगर के प्रात: पूजनादि के पश्चात् परमात्मप्रकाश, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये।

मन्दसौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर, गौतमनगर में पर्व के अवसर पर पण्डित कांतिकुमारजी पाटनी, इन्दौर के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

लुकवासा (म.प्र.) : यहाँ सागर से पधारे ब्र. नन्हेलालजी जैन के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित सुकुमालजी शास्त्री द्वारा अमूल्य तत्त्वविचार पर कक्षा ली गई। प्रात: गुरुदेवश्री का टेप प्रवचन चलता था। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **ह्न दिनेश जैन**

रामपुर मणिहारन (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित वीरेन्द्रजी वीर, फिरोजाबाद के तीनों समय समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक एवं दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा श्रीमती सरोजलता जैन द्वारा बालकक्षा एवं प्रौढ़कक्षा ली गई। **ह्न राजेश जैन**

जसवन्तनगर (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित लालारामजी साहू, अशोकनगर के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। **ह्न धनेशचन्द्र जैन**

लोहारदा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित बाबूलालजी बांझल, गुना के प्रात: समयसार एवं रात्रि में पुरुषार्थसिद्ध्युपाय तथा दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में छहढ़ाला ग्रन्थ पर प्रौढ़कक्षा ली गई।

मलकापुर (महा.) : यहाँ पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, खनियाधांना के तीनों समय समयसार, छहढ़ाला एवं दशधर्मों पर मार्मिक व्याख्यान हुये। **ह्न मनोज नानोटी**

शेरकोट (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पण्डित प्रदीपकुमारजी जैन, धामपुर के तीनों समय मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में भक्ति, बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **ह्न वीरेन्द्र जैन**

बरूआसागर (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित सुगनचन्दजी जैन, गुना के दोनों समय प्रवचन एवं कक्षा के माध्यम से प्रभावना हुई।

डांडा इटावा (उ.प्र.) : यहाँ सेमारी से पधारे पण्डित डूंगरमलजी जैन के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार, दोपहर में छहढ़ाला एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। **ह्न प्रदीप जैन**

बानपुर (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित विमलकुमारजी जैन, जलेसर के प्रात: सामूहिक पूजन के पश्चात् मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर विशेष कक्षा ली गई।

वसमतनगर (महा.) : यहाँ पण्डित संजयजी महाजन, वाशिम के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में छहढ़ाला एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा, जिनेन्द्रभक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **ह्न सुभाष पुरणकर**

मुम्बई (वसई) : यहाँ विदुषी चेतनाबेन, देवलाली द्वारा तीनों समय प्रवचन एवं कक्षा के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

अहमदाबाद (बापूनगर) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित महावीरजी शास्त्री, उदयपुर के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। सायंकाल छहढ़ाला की विशेष कक्षा ली गई।

शिकोहाबाद (उ.प्र.) : यहाँ नवनिर्मित दि. जैन मन्दिर में पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, जयपुर के प्रात: समयसार, दोपहर में इष्टोपदेश तथा रात्रि में दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। इस अवसर पर दशलक्षण विधान भी सम्पन्न हुआ।

अक्कलकोट (महा.) : यहाँ पण्डित विजयकुमारजी राऊत, रिठद के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में छहढ़ाला एवं रात्रि में दशधर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुये। **ह्न गुलाबचन्द शहा**

शिरडशहापुर (महा.) : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पण्डित प्रशान्तकुमारजी काले के प्रात: समयसार एवं रात्रि में अष्टपाहुड ग्रन्थ पर प्रवचन हुये तथा पण्डित प्रेमचन्दजी महाजन एवं रमेशचन्दजी महाजन के द्वारा प्रौढ़कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री, रहली के प्रतिदिन दोनों समय प्रवचन, दोपहर में प्रौढ़कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के द्वारा पर्व सानन्द सम्पन्न हुआ।

सागर (गौरमूर्ति-म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर दि. जिनमन्दिर में दोनों समय पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री, रायपुर के मोक्षमार्गप्रकाशक एवं दशधर्मों पर प्रवचन हुये। इस अवसर पर दशलक्षणविधान, शांतिविधान एवं पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलजी बेलोकर, सुलतानपुर द्वारा सम्पन्न कराये गये। आपके द्वारा दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर मार्मिक कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **ह्न अखिलेश शास्त्री**

ऋषिकेश (उ.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन पंचायती मन्दिर में विदुषी राजकुमारीजी जैन, जयपुर के प्रात: बारह भावना एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में प्रौढ़कक्षा ली गई। **ह्न प्रदीप जैन**

कुर्डुवाडी (महा.) : यहाँ पण्डित अनिलकुमारजी बेलोकर शास्त्री के तीनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक, छहढ़ाला एवं दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर प्रौढ़कक्षा एवं सांयकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति एवं अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये।

मैनपुरी (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, जयपुर के प्रात: समयसार एवं रात्रि में बारह भावना तथा दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में पंचलब्धी की प्रौढ़कक्षा तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

पुणे (चिंचवड़) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: सामूहिक अभिषेक-पूजन के पश्चात् पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी, पारशिवनी द्वारा षोडशकारण भावना एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में शंका-समाधान के पश्चात् तत्त्वार्थसूत्र पर प्रौढ़कक्षा एवं सांयकाल में बालकक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। अन्तिम दिन शांतिविधान का आयोजन किया गया। **ह्न प्रकाशचन्द्र बडजात्या**

बेलगाँव (कर्ना.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री महावीर भवन में प्रात: विदुषी धवलश्री के तत्त्वार्थसूत्र पर कन्नड भाषा में, दोपहर में पण्डित रमेशजी शिरहट्टी के रत्नकरण्ड श्रावकाचार तथा श्रीमती सुनंदाजी चिवटे के समयसार पर एवं रात्रि में पण्डित सुरेशजी काले, राजुरा के बारह भावना विषयपर मार्मिक प्रवचन हुये।

प्रात: नवलब्धी विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुरेशजी काले एवं पण्डित रमेशजी शिरहट्टी द्वारा कराये गये। **ह्न रमेश चिवटे**

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

जैन तिथि दर्पण

जैन तिथि दर्पण

(पृष्ठ 5 का शेष ...)

रहली (म.प्र.) : यहाँ पण्डित आदित्यजी शास्त्री, खुरई के प्रात: समयसार, दोपहर में प्रौढ़कक्षा एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये।

कूण (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पण्डित श्रीपालजी जैन के तीनों समय तत्त्वार्थसूत्र, छहढ़ाला एवं दशधर्मों पर प्रवचन हुये। रात्रि में बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये ।

वाशिम (महा.) : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर, जवाहरनगर में प्रात: तत्त्वार्थसूत्र विधान के पश्चात् पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, सिलवानी के प्रात: प्रवचनसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। सांयकाल बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्न संतोषकुमार पाटनी**

सेनगाँव (महा.) : यहाँ पण्डित शंशाकजी शास्त्री, अभाना के प्रात: छहढ़ाला, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। सांयकाल बालकक्षा ली गई। **ह्न बालाजी उखलकर**

कैराना (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित अश्विनजी शास्त्री, बांसवाड़ा के दोनों समय प्रवचन हुये। दोपहर में छहढ़ाला की कक्षा तथा सायंकाल पण्डित सचिनजी भरड़ा द्वारा बालकक्षा एवं जिनेन्द्रभक्ति ली गई। इस अवसर पर दशलक्षण मण्डल विधान भी सम्पन्न हुआ।

चिखली (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में पण्डित सत्येन्द्रकुमारजी मिरकुटे के प्रात: छहढ़ाला एवं रात्रि में समयसार पर मार्मिक व्याख्यान हुये। **ह्न डॉ. पी. जैन**

कानपुर (किदवईनगर-उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित निकलंकजी शास्त्री, कोटा के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुये।

पुसद (महा.) : यहाँ पण्डित रवीन्द्रजी काले, कारंजा के तीनों समय समयसार, छहढ़ाला एवं दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। सांयकाल बालकक्षा एवं जिनेन्द्र भक्ति तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

पंधाना (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, उगार के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार, दोपहर छहढ़ाला एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

दिल्ली (मोरीगेट) : यहाँ पण्डित प्रशान्तकुमारजी जैन, मौ के दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रात: दशलक्षण विधान का आयोजन किया गया।

अभाना (म.प्र.) : यहाँ पण्डित आशीषजी शास्त्री, जबेरा के समयसार कलश एवं दशधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में छहढ़ाला पर कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई।

धरमपुरी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित नितिनजी शास्त्री, अहमदाबाद द्वारा दोनों समय प्रवचन एवं दोपहर में कक्षा का आयोजन किया गया।

गौरझामर (म.प्र.) : यहाँ पण्डित राहुलजी शास्त्री, बदरवास के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये।

कानपुर (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित सचिन्द्रजी जैन, गढ़ाकोटा के दोनों समय रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं दशधर्म पर प्रवचन हुये।

रांझी (जबलपुर) : यहाँ पण्डित सौरभजी जैन, गढ़ाकोटा के बारहभावना एवं दशधर्म पर प्रवचन हुये।

सनावद (म.प्र.) : यहाँ पण्डित संभवजी शास्त्री, नैनधरा के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में रत्नकरण्डश्रावकाचार पर प्रौढ़कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई।

गंगेरू (उ.प्र.) : यहाँ पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, खड़ैरी द्वारा दोनों समय प्रवचन, दोपहर में कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

बून्दी (राज.) : यहाँ पण्डित देवेन्द्रजी शास्त्री, अकाझिरी के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये।

मांझलपुर (बडोदरा-गुज.) : यहाँ पण्डित शाकुलजी जैन, मेरठ के प्रात: पंचपरमेष्ठी के स्वरूप पर एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में छहढ़ाला पर कक्षा ली गई।

वसुंधरा (गाजियाबाद-उ.प्र.) : यहाँ पण्डित सुनीलजी शास्त्री, शाहगढ़ के प्रवचनों एवं कक्षा का लाभ समाज को प्राप्त हुआ।

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: 24 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के कार्य पण्डित अमितजी शास्त्री, लुकवासा द्वारा कराये गये। रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये।

झांसी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अजीतजी शास्त्री, गडखेडा के दोनों समय प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं छहढ़ाला पर कक्षा ली गई।

पोरबन्दर (गुज.) : यहाँ पण्डित निखिलजी शास्त्री, बण्डा के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये।

वैर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पण्डित एलमचन्दजी शास्त्री के प्रवचन एवं प्रौढ़कक्षा, बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। **ह्न मुकेशचन्द्र जैन**

विहीगाँव (महा.) : यहाँ पण्डित अभिनन्दनजी शास्त्री, हेरले के प्रात: दशधर्म एवं रात्रि में बारहभावना पर सारगर्भित प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर विशेष कक्षा ली गई। इस प्रसंग पर अ. भा. जैन युवा फैडरेशन एवं पाठशाला का पुनर्गठन किया गया। **ह्न सुरेश बेलोकर**

उदयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित अंचलप्रकाशजी शास्त्री, ललितपुर के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये।

नलदुर्ग (महा.) : यहाँ आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में पण्डित प्रशांतजी उकलकर, गोवर्धन के प्रात: दशधर्म एवं मै कौन हूँ, दोपहर में प्रौढ़कक्षा एवं रात्रि में विविध विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान के अनेक सदस्य बनें। **ह्न प्रवीण कासार**

जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री ता.त.दि. जैन चैत्यालय, हनुमानताल में पर्व के अवसर पण्डित सचिनकुमारजी शास्त्री, बरेली द्वारा दोनों समय प्रवचन, बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

तालेडा (राज.) : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, सिंगोडी के तीनों समय प्रवचन, कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई ।

अकलूज (महा.) : यहाँ पण्डित रोहनजी रोटे, कोल्हापुर के प्रात: इष्टोपदेश एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन तथा दोपहर एवं सांयकाल प्रौढ़कक्षा एवं बालकक्षा ली गई। **ह्न उत्कर्ष दोशी**

गढ़ाकोटा (म.प्र.) : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर पण्डित भागचन्दजी पथरिया एवं पण्डित अनंतवीरजी जैन, फिरोजाबाद के तीनों समय समयसार, रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। बालकक्षा एवं कार्यक्रम भी सम्पन्न हुये। **ह्न ज्ञानचन्द्र जैन**

बेलोरा (महा.) : यहाँ पण्डित मुकुंदजी ढोके, वसमतनगर के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र व द्रव्यसंग्रह पर प्रौढ़कक्षा ली गई। **ह्न सदानन्दजी सत्यप्पा**

बड़वाह (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री, खरगापुर के प्रात: पूजन के पश्चात् सम्यक्त्व के आठ अंग, दोपहर में छहढ़ाला एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। **ह्न सुधीर जैन**

सुसनेर (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित विजयजी यादव, बानपुर द्वारा प्रवचन, कक्षा, एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमादि के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। **ह्न केसरीसिंह पाण्डे**

पिंप्री राजा (महा.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर में पण्डित किशोरजी धोंगडे के प्रात: सम्यग्दर्शन, सात तत्त्व आदि विविध विषयों पर एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा ली गई। **ह्न फकीरचन्द सोनटक्के**

अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी शास्त्री, बरा के दोनों समय प्रवचन, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा, सायंकाल बालकक्षा आदि के माध्यम से समाज को लाभ मिला। इस अवसर पर सोनगढ़ से पधारे पण्डित झमकलालजी के भी प्रवचन हुये।

बोहेडा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित अनन्तराज कम्बली के इष्टोपदेश एवं दशधर्म पर प्रवचन हुये तथा दोपहर में छहढ़ाला ग्रन्थ पर कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा ली गई। **ह्न बंशीलाल जेतावत**

कन्नड (महा.) : यहाँ पण्डित निखिलजी शास्त्री, कोतमा के तीनों समय प्रवचन, कक्षा एवं बालकक्षा के माध्यम से कार्यक्रम सम्पन्न हुये। स्थानिय विद्वान पण्डित सचिनजी पाटनी का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

बून्दी (राज.) : यहाँ श्री महावीरस्वामी दि. जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर पण्डित मोहनलालजी राठोड, केशवरायपाटन के समयसार एवं दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। **ह्न महावीर काला**

ग्वालियर (म.प्र.) : यहाँ तेरापंथी दि. जैन मन्दिर में पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री, जबलपुर के प्रतिदिन पूजन, प्रवचन, कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा धर्मप्रभावना हुई।

धर्माबाद (नांदेड-महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर प्रात: पूजन के पश्चात् पण्डित विवेकजी सातपुते के दशधर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में जिनेन्द्रभक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। **ह्न सुभाष गोधा**

मालशिरस (महा.) : यहाँ पण्डित हितेशजी शास्त्री, चिचोली के दोनों समय प्रवचन हुये। दोपहर एवं सायंकाल में कक्षा ली गई।

सावदा (महा.) : यहाँ पण्डित सतीशजी बोरालकर, डोणगाँव के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन तथा सायंकाल बालकक्षा ली गई। **ह्न नरेन्द्र घोडके**

फालेगाँव (महा.) : यहाँ पण्डित दीपकजी अथणे के प्रात: नियमसार व रात्रि में दशधर्म पर, दोपहर में पण्डित रूपचन्दजी संघई के तत्त्वार्थसूत्र पर मार्मिक प्रवचन हुये। इस अवसर पर तीन दिन पं. अनंतजी विश्वम्भर के प्रवचनों का लाभ भी प्राप्त हुआ। **ह्न जयवंत संघई**

मगरोन (म.प्र.) : यहाँ पण्डित प्रमेशजी जैन, जबेरा द्वारा दोनों समय प्रवचन, दोपहर में कक्षा व रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

जेतपुर (गुज.) : यहाँ पण्डित नयनजी शाह, हैद्राबाद द्वारा प्रवचन, कक्षा एवं बालकक्षा का आयोजन किया गया।

मल्हारगढ़ (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अकुंरजी शास्त्री, देहगाँव के प्रवचन, कक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई।

बोहेडा (राज.) : यहाँ पण्डित अनंतराज जैन, मण्ड्या द्वारा प्रवचन एवं कक्षा का आयोजन किया गया।

अमायन (म.प्र.) : यहाँ पण्डित अमितजी जैन, भोपाल के प्रवचन एवं कक्षा के माध्यम से समाज को धर्मलाभ प्राप्त हुआ।

धर्मप्रभावना

घटप्रभा (कर्नाटक) : यहाँ दिनांक 30 सितम्बर एवं 1 अक्टूबर, 2004 को ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर के प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर बालकों को कण्ठपाठ का पुरस्कार भी दिया गया।

रायपुर (छ.ग.) : यहाँ श्री चन्द्रप्रभ दि. जैन चैत्यालय में दिनांक 7 से 11 सितम्बर, 2004 तक ब्र. विनोदकुमारजी जैन द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। **ह्न समकित सिंघई**

फालेगाँव (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में दि. 8 से 11 सितम्बर, 2004 तक पण्डित अनीलकुमारजी बेलोकर शास्त्री, सुलतानपुर द्वारा शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर दोनों समय प्रवचन,कक्षा, बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा समाज को विशेष धर्मलाभ प्राप्त हुआ।

हार्दिक बधाई !

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महा., जयपुर में ब्र. यशपालजी जैन द्वारा कण्ठपाठ, जिनवाणी उपासक, लेखन आदि विभिन्न प्रतियोगिताएँ छात्रों के प्रोत्साहनार्थ चलाई जाती है। इसी के अन्तर्गत महाविद्यालय के छात्र रवीन्द्र काले, कारंजा ने प्रवचन लेखन प्रतियोगिता में एवं विशेष जैन, ने जिनवाणी उपासक में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। दोनों छात्रों को ब्र. यशपालजी जैन द्वारा पुरस्कृत किया गया।

2) बांसवाड़ा(राज.) : यहाँ श्री ज्ञायक चैरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संस्थापित आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान के छात्र अमित जैन ने राज्यस्तरीय वादविवाद प्रतियोगिता, शौर्य जैन ने प्रश्नमंच प्रतियोगिता, एवं अतुल जैन ने काव्यपाठ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अमोल निर्वाणे का राज्यस्तरीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता में चयन हुआ। उक्त छात्रों की इन उपलब्धियों पर जैनपथप्रदर्शक एवं स्मारक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई ! **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 15

&MkWñ gqdepUn HkkfjYy

छठवाँ प्रवचन

प्रवचनसार परमागम के ज्ञानतत्त्व प्रज्ञापन महाधिकार के सुखाधिकार के आरंभ से ही यह कहते आ रहे हैं कि जिनके अतीन्द्रियज्ञान है, उनके अतीन्द्रियसुख है। इसे ही सम्पूर्ण सुखाधिकार में आचार्यदेव ने अनेक तर्क और युक्तियों से सिद्ध किया है।

यहाँ महत्त्वपूर्ण युक्ति यह है कि उनको **वीतरागी होने के कारण कोई भी इच्छा नहीं रही है व सर्वज्ञ होने के कारण किसी भी प्रकार का अज्ञान नहीं रहा है; अत: उन्हें किसी भी प्रकार का दु:ख सम्भव नहीं है। शक्ति की दुर्बलतावश दु:ख प्रगट होता है; लेकिन उन्हें अनंतवीर्य प्रगट हो गया है; इसलिए भी उन्हें कोई दु:ख नहीं है।**

इसलिए जिन्हें अतीन्द्रियज्ञान है, उन्हें अतीन्द्रियसुख है।

अब, इस सुखाधिकार में सांसारिक सुख की चर्चा करते हैं। वस्तुत: वह सांसारिकसुख सुख है ही नहीं, वह तो दु:ख ही है।

जैसा कि निम्नांकित गाथा में कहा गया है ह्व

मणुआसुरामरिंदा अहिद्दुदा इन्दिएहिं सहजेहिं।
असहंता तं दुक्खं रमंति विसएसु रम्मेसु।।६३।।

(हरिगीत)

नरपती सुरपति असुरपति इन्द्रियविषयदवदाह से।
पीड़ित रहें सह सके ना रमणीक विषयों में रमें।।६३।।

स्वाभाविक इन्द्रियों से दु:खित होते हुये मनुष्येन्द्र (चक्रवर्ती), असुरेन्द्र और सुरेन्द्र उस दु:ख को सहन नहीं करते हुये रम्य विषयों में रमण करते हैं। इसप्रकार वे सुखी नहीं हैं, दु:खी ही हैं।

आचार्यदेव कहते हैं कि वे पाँच इन्द्रियों के विषयों में रमते हैं तथा पाँच इन्द्रियों के विषयों में रमणता दु:ख के बिना संभव नहीं है। जिसप्रकार भोजन करना भूख के बिना संभव नहीं है, स्पर्शनइन्द्रिय का विषयसेवन वासना की तीव्रतम जाग्रती बिना संभव नहीं है; उसीप्रकार दु:ख के बिना पंचेन्द्रिय विषयों में रमण करना संभव नहीं है। अत: वे दु:खी ही हैं। जिनमें पंचेन्द्रिय के विषय देखे जाते हैं; वे विषय इस बात के प्रमाण हैं कि वे दु:खी हैं।

कोई आदमी यह कहे कि मैं कभी बीमार नहीं पड़ता; क्योंकि मेरे साथ तीन डॉक्टर हमेशा रहते हैं और एक दवाइयों का बक्सा मैं हमेशा अपने साथ रखता हूँ। उसका यह कहना सत्य नहीं है; क्योंकि दवाइयों का बक्सा एवं डॉक्टरों की उपस्थिति इस बात का प्रतीक है कि वह सदा बीमार रहता है।

ऐसे ही, जो लोग ऐसा कहते हैं कि पंचेन्द्रियों के भोग मुझे उपलब्ध हैं; इसलिए मैं सब ओर से सुखी हूँ; मुझे जो चाहिए; वह मैं खाऊँ-पिऊँ; जहाँ चाहूँ, वहाँ जाऊँ; काम करूँ या नहीं करूँ; इसप्रकार मुझे पाँचों इन्द्रियों के विषय हमेशा उपलब्ध रहते हैं; इसलिए मैं सुखी हूँ। उनसे आचार्य कहते हैं कि **पाँचों इन्द्रियों के विषयों की निरन्तरता तेरे सुखी होने की नहीं, दु:खी होने की निशानी है।**

तीर्थंकर ऋषभदेव ८३ लाख पूर्व की आयु की वृद्धावस्था में भी नीलांजना का नृत्य देख रहे थे ह्व यह उनके सुख की निशानी है या दु:ख की ? चक्रवर्ती भरत के ९६ हजार पत्नियाँ थीं ह्व वे उनकी सुख की निशानी है या दु:ख की ?

भगवान ऋषभदेव की दिव्यध्वनि खिर रही थी और भरत चक्रवर्ती ६० हजार वर्ष के लिए लड़ने के लिए निकल गए। वे सुखी थे या दु:खी ? अरे भाई ! वे दु:खी ही थे; इसलिए तो लड़ने के लिए निकल गए थे।

एक साधु धुनि रमाये बैठा था, इतने में कोई एक आदमी आया और उसने साधु के सामने एक पैसा चढ़ाया। उस साधु ने बहुत मना किया कि हमें पैसे से क्या काम ?

नहीं, महाराज आप रख लो; जिसे सबसे अधिक आवश्यकता हो, जो सबसे अधिक दुखी हो; उसे दे देना।

इतना कहकर वह वहाँ से चला गया।

अब साधु का दिमाग आत्मा-परमात्मा से हटकर इस पैसे का क्या करूँ ह्व इसमें उलझ गया। इसप्रकार पैसा ही पैसा उसके ध्यान का ध्येय बन गया।

हाथी पर सवार एक राजा दूसरे राजा पर चढ़ाई करने के लिए जा रहा था; तब उस साधु ने वह पैसा राजा की ओर जोर से फेंका तो वह पैसा राजा की नाक पर लगा।

तब राजा ने उस साधु से पूछा कि भाई तुमने यह पैसा मेरी नाक पर क्यों मारा ?

उस साधु ने कहा कि जो आदमी यह पैसा चढ़ाकर गया था, उसने यह कहा था कि जिसे सबसे अधिक आवश्यकता हो, जो सबसे अधिक दुखी हो; उसे यह दे देना। मुझे सबसे अधिक आवश्यकतावाले और दुखी आप ही दिखे; क्योंकि सबकुछ होते हुए भी आप दूसरे राजा पर चढ़ाई कर रहे हो। इसका अर्थ यह है, सबसे अधिक आवश्यकता वाले आप ही हो, सबसे अधिक दुखी भी आप ही हो; इसलिए आपको ही............।

यह सब इस बात का प्रतीक है कि पंचेन्द्रिय के विषयों की उपलब्धि दु:ख ही है। यही बात अगली गाथा में आचार्यदेव कह रहे हैं ह्व

जेसिं विसएसु रदी तेसिं दुक्खं वियाण सब्भावं।
जइ तं ण हि सब्भावं वावारो णत्थि विसयत्थं।।६४।।

(हरिगीत)

पंचेन्द्रियविषयों में रती वे हैं स्वभाविक दु:खीजन।
दु:ख के बिना विषविषय में व्यापार हो सकता नहीं।।६४।।

जिन्हें विषयों में रति है, उन्हें दु:ख स्वाभाविक जानना चाहिए; क्योंकि यदि वह दु:ख स्वाभाविक न हो तो विषयों के लिए व्यापार न हो।

जिन्हें विषयों में रति है, उन्हें आचार्य स्वभाव से ही दुखी कह रहे हैं; वे कर्मोदय से दु:खी नहीं हैं। वे पाँच इन्द्रियों के विषयों की सामग्री प्राप्त नहीं हैं; इसलिए दु:खी नहीं हैं।

इसे ही आगे आचार्य इसप्रकार कहेंगे कि पाँच इन्द्रियों के विषयों की प्राप्ति है; इसलिए सुखी नहीं हैं। यहाँ दु:खी का प्रकरण है, इसलिए उनके स्वाभाविक दु:ख है ह्न ऐसा आचार्य कह रहे हैं। यह दु:ख परजन्य नहीं है, अंतर में पाँच इन्द्रियों के विषयों के प्रति जो रति है, वह उनके दु:ख का कारण है।

यदि वे स्वभाव से दु:खी नहीं होते तो पाँच इन्द्रियों के विषयों में उनका व्यापार ही नहीं होता।

प्रश्न ह्न उन्हें पाँच इन्द्रियों के विषय पुण्य के उदय से मिल गए तो हम क्या करें ? किसी के तो एक भी शादी नहीं होती और चक्रवर्ती की ९६ हजार शादियाँ हो गईं, राजपाट मिल गया है; इसमें उनका क्या दोष?

उत्तर ह्न अरे भाई ! पाँच इन्द्रियों के विषय तो पुण्य के उदय से मिले; लेकिन उनका सेवन वह पुण्यभाव से कर रहा है या पापभाव से ? उनके सेवन का भाव तो पापभाव ही है।

अरे भाई ! **संयोगरूप से उपलब्धि भले ही पुण्य का फल होगी; लेकिन उनका सेवन तो पापभाव के बिना संभव नहीं है।**

यहाँ आचार्य यही सिद्ध कर रहे हैं कि उन्हें स्वाभाविक दु:ख है अर्थात् वे किसी अन्य के कारण दु:खी नहीं हैं। टीका में बहुत मार्मिक कहा है कि ह्न 'जिनकी हत इन्द्रियाँ जीवित हैं।'

हत अर्थात् हत्यारी, बहुत दु:ख देनेवाली, निंदनीय। यहाँ इन्द्रियों के जीवित होने से आशय भोग की इच्छा के विद्यमान होने से है। हत इन्द्रियाँ जिन्दा हैं अर्थात् पाँच इन्द्रियों के भोगने का भाव जिन्दा है। **भोगने के भाव के कारण ही दु:ख है, पर के कारण नहीं।**

संसारी जीव स्वभाव से ही दु:खी हैं; क्योंकि उनके विषयों में रति देखी जाती है; पाँचों इन्द्रियों के विषयों में प्रेम देखा जाता है। यह इस बात का प्रतीक है कि वे स्वभाव से ही दु:खी हैं।

यहाँ स्वभावपर्याय मत लेना। यह संसार के स्वभाव की बात है अर्थात् वे स्त्री-पुत्र के कारण दु:खी नहीं हैं, वे पर के कारण दु:खी नहीं हैं, कर्म के उदय से दु:खी नहीं है; उनके अंदर जो विषयचाह है, वे उसके कारण दु:खी हैं। इसके लिए यहाँ पाँच उदाहरण दिए हैं।

हाथी हथिनीरूपी कुट्टिनी के शरीर स्पर्श की ओर, मछली बंसी में फँसे हुए माँस के स्वाद की ओर, भ्रमर बंद हो जाने पर कमल की गंध की ओर, पतंगा दीपक की ज्योति के रूप की ओर तथा हिरण शिकारी के संगीत के स्वर की ओर दौड़ते हुए दिखाई देते हैं। यह इस बात का प्रतीक है कि वे स्वाभाविक दु:खी हैं; अन्यथा उनका विषयों की ओर दौड़ना संभव नहीं था।

जंगली हाथियों को पकड़ने के लिए जंगल में एक बहुत बड़ा गहरा खड्डा खोदा जाता है। उस पर झीना आवरण डालकर, उसके ऊपर मिट्टी और दूब-घास व झाड़ियाँ डाल दी जाती हैं।

जंगली हाथियों को फंसाने के लिए एक हथिनी को प्रशिक्षित करते हैं। वह चतुर हथिनी अपनी कामुक चेष्टाओं से जंगली हाथियों को आकर्षित करती है, मोहित करती है और अपने पीछे-पीछे आने के लिए प्रेरित करती है। उनसे नानाप्रकार की क्रीड़ाएँ करती हुई, वह हथिनी उन्हें उस गड्ढे के समीप लाती है। तेजी से भागती हुई वह कुट्टनी हथिनी तो जानकार होने से उस गड्ढे से बचकर निकल जाती है; पर तेजी से पीछा करनेवाला भागता हुआ कामुक हाथी उस गड्ढे में गिर जाता है। इसप्रकार वह अपनी स्वाधीनता खो देता है, बंधन में पड़ जाता है।

इसप्रकार स्पर्शन् इन्द्रिय के विषय के लिए हाथी, रसना इन्द्रिय के विषय के लिए मछली, घ्राण इन्द्रिय के विषय के लिए भौंरा, चक्षु इन्द्रिय के विषय के लिए पतंगा और कर्णेन्द्रिय के विषय के लिए हिरण का उदाहरण दिया है।

यह जो पाँच इन्द्रियों के विषयों की तरफ दौड़ते हुए देखे जाते हैं; उन्हें किसी ने दौड़ाया नहीं है, किसी ने प्रशिक्षित नहीं किया है; वे स्वयं ही विषयों की ओर दौड़ते हैं; अत: स्वाभाविकरूप से दुखी हैं।

अब आचार्य, चक्रवर्तियों की और इन्द्रों की बात करते हैं। देखो, इन्द्रों की कैसी दुर्दशा है ? विषय क्षणिक हैं; उनका अंत, नाश अतिनिकट है; पाँच इन्द्रियों के जो विषय हैं, वे अनंतकाल तक रहनेवाले नहीं हैं; तथापि वे इन्द्रादि विषयों की ओर दौड़ते हुए दिखाई देते हैं।

इससे यह तो सिद्ध ही है कि वे दुखी हैं। यदि वे दुखी नहीं होते तो इन्द्रियविषयों के प्रति दौड़ते दिखाई नहीं देते; क्योंकि जिसका शीतज्वर उपशांत हो गया है, वह पसीना आने के लिए उपचार क्यों करेगा ? *(क्रमश:)*

साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का समय बदला

साधना चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन दिनांक 28 सितम्बर 2004 से प्रतिदिन प्रात: 6.45 बजे प्रसारित किये जायेंगे। यदि आपके गांव/शहर में साधना चैनल न आता हो तो अपने केबल ऑपरेटर से कहकर प्रारंभ करावें। कोई कठिनाई होने पर श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से 011-32106419 नम्बर पर सम्पर्क करें।

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

बेलगाँव और सांगली में भी....

बेलगाँव (कर्ना.) : यहाँ जैन युवक मंडल के आग्रह से दिनांक 29 सितम्बर को पर्यूषण पर्व के पश्चात् पधारे डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर के 'भगवान आत्मा' एवं 'अपने में अपनापन' इस विषयपर दो प्रवचन हुये तथा ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर के भी प्रवचन का लाभ स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ।

सांगली (महाराष्ट्र) : यहाँ दगडे कन्या हायस्कूल सांगली में दिनांक 28 सितम्बर को प्रात: डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर का अहिंसा विषयपर मार्मिक प्रवचन हुआ। प्रवचनोपरान्त हायस्कूल के प्राचार्य की ओर से डॉ. भारिल्लजी का वैशिष्ट्यपूर्ण रीति से स्वागत किया गया।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम में विदुषी स्वयंप्रभाजी पाटील, सांगली का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

रविवारीय गोष्ठीयाँ सानन्द सम्पन्न

1) जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय, जयपुर में दिनांक 10 अक्टूबर, 2004 को 'चार अनुयोग : एक स्वरूप' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसकी अध्यक्षता पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने की। गोष्ठी में श्रेष्ठ स्थान दीपक अथणे एवं रविन्द्र बुरसे, जालना ने प्राप्त किया। **ह्न विक्रान्त पाटनी**

2) बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ श्री ज्ञायक चैरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संस्थापित आचार्य अकलंक शिक्षण संस्थान में साप्ताहिक गोष्ठियों की श्रृंखला में 'समयसार : एक अनुचिन्तन' नामक विषय पर गोष्ठी आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता श्री महीपालजी जैन ने की। प्रथम स्थान धनपाल ज्ञायक, द्वितीय स्थान अमित जैन, अतुल जैन तथा विनोद जैन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। मुख्य अतिथि पण्डित राकेशजी शास्त्री, दाहोद एवं बसन्तलालजी जैन थे। **ह्न गणतंत्र जैन**

वेदी-शिखर शुद्धी सानन्द सम्पन्न

सोलापुर (महा.) : यहाँ श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर में दि. 10 एवं 11 सितम्बर, 04 को वेदी-शिखर शुद्धी का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यागमण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित प्रशांतकुमारजी मोहरे, सोलापुर द्वारा कराये गये। दोनों समय पण्डित राजकुमारजी आलंदकर के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

जैन अध्यात्म महोत्सव सम्पन्न

मुम्बई (महा.) : जैन अध्यात्म स्टडी सर्किल फैडरेशन, मुम्बई द्वारा दिनांक 11 सितम्बर से 18 सितम्बर, 2004 तक मुम्बई के विभिन्न स्थानों पर आयोजित जैन अध्यात्म महोत्सव के अन्तर्गत डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के शुद्ध अन्तस्तत्त्व, नि:शल्यो व्रती, समयसार का सार, समाधिमरण, आत्मा-परमात्मा, योग और उपयोग आदि विषयों पर अध्यात्मरसगर्भित व्याख्यान हुये।

इसीप्रकार पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, पण्डित कस्तूरचन्दजी जैन विदिशा, पण्डित विपिनजी शास्त्री गोहद, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट आदि विद्वानों के भी विभिन्न विषयों पर मार्मिक व्याख्यान हुये।

प्रवेश फार्म आमन्त्रित

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राजस्थान) की शीतकालीन परीक्षा जनवरी 2005 के छात्र प्रवेश फार्म आमंत्रित किये जाते है। सम्बन्धित सभी परीक्षा केन्द्रों को खाली प्रवेश-फार्म डाक से भेजे जा चुके हैं। अत: शिघ्रातिशिघ्र छात्र प्रवेश फार्म भरकर जयपुर कार्यालय भिजवाने का कष्ट करें, ताकि रोल नंबर एवं प्रश्नपत्र सामग्री नियत समयपर आपको प्राप्त हो सके। जिन केन्द्रों को अभी तक प्रवेश-फार्म प्राप्त नहीं हुए हैं, वे तत्काल पत्र लिखकर परीक्षा फार्म मँगा लेवे तथा उन्हें भरकर परीक्षा बोर्ड कार्यालय, जयपुर को शीघ्र भिजवा देवें।

ह्न ओमप्रकाश आचार्य, प्रबंधक : परीक्षा विभाग

पत्राचार जैनधर्म-दर्शन व संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम 2005 में प्रवेश तथा पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

1) दिगम्बर जैन अतशिय क्षेत्र महावीरजी द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान भट्टारकजी की नसियाँ, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर द्वारा निर्धारित उपर्युक्त पाठ्यक्रम भारत स्थित उन अध्ययनार्थियों के लिये होगा, जिन्होंने किसी भी विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसका माध्यम हिन्दी रहेगा। पाठ्यक्रम का सत्र 1 जनवरी 2005 से 31 दिसम्बर 2005 तक रहेगा। निर्धारित आवेदन-पत्र जयपुर कार्यालय से मंगवाकर 30 अक्टूबर, 2004 तक अवश्य भेजें।

प्रवेश अनुमति मिलने पर पाठ्यक्रम का शुल्क 200/ह्न ड्राफ्ट द्वारा दिनांक 30 नवम्बर, 2004 तक भेजना होगा।

2) श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र महावीरजी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी द्वारा पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम का तेरहवाँ सत्र 1 जनवरी, 2005 से आरम्भ किया जा रहा है। इसमें हिन्दी एवं प्रान्तिय भाषा विभागों के साथ-साथ अन्य सभी विभागों के अध्यापक, शोधार्थी, अध्ययनरत छात्र एवं संस्थानों में कार्यरत विद्वान सम्मिलित हो सकेगें।

नियमावली एवं आवेदन पत्र दिनांक 10 नवम्बर, 2004 तक अकादमी कार्यालय श्री दि. जैन भट्टारकजी की नसियाँ, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004 से प्राप्त करें। कार्यालय में आवेदन पत्र पहुचनें की तारीख 30 नवम्बर, 2004 है। **ह्न कमलचन्द सोगाणी**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अक्टूबर (द्वितीय) 2004
J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास ❊ **पं. जितेन्द्र वि.राठी शास्त्री**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127